

Amire Ahle Sunnat Se Tilavate Quraan Ke
Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)



इफ्तार रिफाला : 313
Weekly Booklet : 313



शेखे तुरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, जानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा मौलाना
मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरि रजवी के मल्फूजात वर तद्दरीसी गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से

तिलावते कुरआन

के बारे में सुवाल जवाब

सफ़ाहत 19

- क्या अ़स के वा 'द कुरआने पाक पढ़ सकते हैं ? 06
- रोज़ाना कितना कुरआने पाक पढ़ना चाहिये ? 08
- क़द्विस्तान में बुलन्द आवाज़ से
कुरआन पढ़ना कैसा ? 11
- कुरआने करीम गुलत पढ़ने की चन्द मिसालें 14

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शौखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (مُسْتَضَرَف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفکر بیروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना
व बक्कीअ
व मरिफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : अमीरे अहले सुन्नत से
तिलावते कुरआन के बारे में सुवाल जवाब

सिने तबाअत : ज़िल हज़ 1444 हि., जूलाई 2023 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्तिजा : किसी और को यह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला “अमीरे अहले सुन्नत से तिलावते कुरआन के बारे में सुवाल जवाब”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत بِرَكَاةُهُمُ الْعَالِيَةِ से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है ।

अमीरे अहले सुन्नत से तिलावते कुरआन के बारे में सुवाल जवाब

दुआए ख़लीफ़ए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत से तिलावते कुरआन के बारे में सुवाल जवाब” पढ़ या सुन ले उसे कुरआने करीम की तिलावत करने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उस की बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे ।

(ترمذی، 2/27، حدیث 484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

सुवाल : क्या कुरआने पाक को बिग़ैर समझे या'नी तरजमे के बिग़ैर पढ़ने से कोई सवाब मिलता है क्यूं कि हमें पता ही नहीं कि हम क्या पढ़ रहे हैं ?

जवाब : कुरआने पाक को बिग़ैर समझे या'नी तरजमे के बिग़ैर पढ़ने से बिल्कुल सवाब मिलेगा । लिहाज़ा ग़लत प्रोपेगण्डे कर के मुसल्मानों को कुरआने करीम से दूर न किया जाए कि जब समझ नहीं आती तो पढ़ने का

क्या फ़ाएदा ? नमाज़ में भी सूराए फ़ातिहा और दीगर जो सूरतें पढ़ी जाती हैं उन की भी कुछ समझ नहीं आती । सना पढ़ते हैं तो इस के भी मा'ना मा'लूम नहीं होते, बिस्मिल्लाह का तरजमा पूछा जाए तो लोग बग़लें झांकना शुरूअ कर देंगे तो अब क्या नमाज़ पढ़ना और बिस्मिल्लाह पढ़ना सब छोड़ देंगे ? यकीनन ऐसी बात नहीं है लिहाज़ा कुरआने करीम समझ न भी आए जब भी पढ़ना चाहिये ।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/407)

सुवाल : कुरआने पाक को इतनी तेज़ रफ़्तारी से पढ़ना कि हुरूफ़ चब जाएं, क्या हुक्म रखता है ?

जवाब : कुरआने करीम बिल्कुल इस तरह पढ़ना चाहिये जैसा **مُرَزَّلٌ مِّنَ اللَّهِ** या'नी **अल्लाह** पाक की तरफ़ से नाज़िल किया गया है मगर आज कल मारामारी और भागम भाग के अन्दाज़ पर कुरआने पाक पढ़ा जाता है और **مُرَزَّلٌ مِّنَ اللَّهِ** के सिवा कुछ समझ में नहीं आता, इस लिये इसे **مُرَزَّلٌ مِّنَ اللَّهِ** की तरह पढ़ना नहीं कहा जाएगा बल्कि येह कुरआन पढ़ना ही नहीं कहलाएगा कि बिल्कुल ही तब्दील हो जाता है और ऐसा पढ़ने वालों पर कुरआने करीम ला'नत करता है । मुम्किन है बा'जों को मेरी बातें चुभती हों और चुभनी भी चाहिएं ताकि तौबा की तौफीक़ नसीब हो । तेज़ रफ़्तारी से कुरआने पाक पढ़ने वाले क्यूं अ़वाम को बे वुकूफ़ बनाते हैं कि हम कुरआने पाक सुना रहे हैं ? जो आप पढ़ते हैं बेचारे भोलेभाले मुसल्मान उसे कुरआन और आप को नेक आदमी समझ रहे होते हैं हालां कि बा'ज अवकात तेज़ पढ़ना गुनाह में मुब्तला कर देता है । अगर कोई तज्वीद के क़वाइद के साथ दुरुस्त कुरआन पढ़े तो तरावीह में बहुत देर लगती है लेकिन हमारे यहां तो आपस में मुक़ाबले होते हैं । कोई कहता है कि हमारे यहां तो 35 मिनट में

तरावीह ख़त्म हो जाती है और कोई कहता है कि हमारे क़ारी साहिब तो “सुपर फ़ास्ट” (ट्रेन) की तरह तेज़ी से जा रहे होते हैं और 25 मिनट में तरावीह ख़त्म कर देते हैं। याद रहे ! रोज़ा और कुरआन बन्दे के लिये क़ियामत के दिन शफ़ाअत करेंगे, रोज़ा अर्ज़ करेगा : ऐ रब्बे करीम ! मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअत इस के हक़ में क़बूल फ़रमा। कुरआन कहेगा कि मैं ने रात को इसे सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअत इस के हक़ में क़बूल फ़रमा। बस दोनों की शफ़ाअतें क़बूल होंगी। (مسند امام احمد، 2/586، حدیث: 6637) अगर रोज़े और कुरआन की शफ़ाअत चाहिये तो इन का एहतिराम करना होगा और कुरआन को सहीह पढ़ना होगा।

आम बोलचाल में भी तेज़ रफ़्तारी की वजह से हुरूफ़ चबाए जाते हैं जैसा कि आम तौर पर लोग سُبْحَانَ اللَّهِ को “ح” को चबा जाते हैं। इसी तरह आम लोगों को न तो दुरुस्त तरीक़े से “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” और कलिमा शरीफ़ पढ़ना आता है और न ही اِنْ شَاءَ اللَّهُ और اَلْحَمْدُ لِلَّهِ कहना आता है। उमूमन लोग اِنْ شَاءَ اللَّهُ को اِنْ شَاءَ اللَّهُ और اَلْحَمْدُ لِلَّهِ को اَلْمَدْحُ لِلَّهِ कहते हैं मसलन : “اِنْ شَاءَ اللَّهُ” मैं आता हूँ” या “اَلْمَدْحُ لِلَّهِ” तबीअत अच्छी है” हालां कि मैं मदनी मुज़ाक़रों वग़ैरा में येह कलिमात कहना कई मरतबा सिखा चुका हूँ मगर फिर भी सहीह नहीं कहते क्यूं कि ग़लत कहने की आदत पड़ी होती है। यूंही बहुत से लोग कुरआन को कुरान कहते हैं। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/355)

सुवाल : चन्द लोगों का मिल कर मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से कुरआने पाक पढ़ना कैसा है ?

जवाब : चन्द लोग मिल कर मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से कुरआने पाक

पढ़ रहे होते हैं यह तरीका ग़लत और ना जाइज़ है। (बहारे शरीअत, 1/552, हिस्सा : 3 माखूज़न) अलबत्ता अगर एक आदमी इस लिये बुलन्द आवाज़ से कुरआने पाक पढ़ रहा है कि दो चार आदमी दूर बैठे सुन रहे हैं और उस की आवाज़ से नमाज़ी या दीगर कुरआने पाक पढ़ने वालों को तक्लीफ़ नहीं हो रही या'नी उन तक ऐसी आवाज़ नहीं जा रही कि जिसे समझा जा सके तो यह तरीका सहीह है। बा'ज़ लोग मस्जिद की पहली सफ़ में लाइन में बैठ कर ज़ोर ज़ोर से तिलावत कर रहे होते हैं बिल खुसूस रमज़ान में ऐसा होता है तो ऐसा करना जाइज़ नहीं है। इसी तरह हमारे यहां तीजे और चेहलम में या वैसे ही लोग रमज़ान में ख़त्म कुरआन करवाते हैं जो कि अच्छा काम है लेकिन उस में सब मिल कर ज़ोर ज़ोर से पढ़ रहे होते हैं यह दुरुस्त नहीं, उन्हें चाहिये कि इतनी आवाज़ से पढ़ें कि खुद सुनें, दूसरे को आवाज़ न जाए अलबत्ता अगर कोई एक पढ़ता है और सब तवज्जोह से सुनते हैं तो यह ठीक है। बा'ज़ लोग दूसरों को बता रहे होते हैं कि मैं ने ए'तिकाफ़ में तीन कुरआन ख़त्म किये, मैं ने पांच कुरआन ख़त्म किये लेकिन सहीह बात यह है कि उन में से अक्सर को दुरुस्त तरीके से सूरए फ़ातिहा, सूरए इख़लास बल्कि **أَعُوذُ بِاللَّهِ** और **بِسْمِ اللَّهِ** पढ़ना भी नहीं आती मगर वोह पांच मरतबा कुरआन ख़त्म करने के डंके बजा रहे होते हैं। ऐसों को चाहिये कि वोह भले पूरे रमज़ान में एक मरतबा पूरा कुरआने करीम ख़त्म करें या फिर आधा या दस पारे पढ़ें मगर दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ें। अगर कुरआने पाक सहीह मख़ारिज के साथ पढ़ना नहीं आता तो सीखना ज़रूरी है। आज कल लोगों को सब कुछ आता है मगर कुरआने पाक सहीह पढ़ना नहीं आता। खुदा की क़सम ! यह बड़ी महरूमि और बद नसीबी की बात है ! उर्दू आती है,

इंग्लिश बहुत अच्छी आती है यहां तक कि बा'जू लोग फ़ख़िय्या कहते होंगे कि उर्दू से मेरी अंग्रेज़ी अच्छी है मगर ऐसों को कुरआने पाक देख कर भी पढ़ना नहीं आता और वोह पढ़े लिखे भी कहलाते हैं हालां कि ऐसे लोग किस तरह पढ़े लिखे कहलाए जा सकते हैं ?

घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दा'वते इस्लामी के तहत मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान के नाम से हजारों मदारिस काइम हैं और आ़म तौर पर येह इशा के बा'द अ़लाकों की मसाजिद में लगाए जाते हैं। इन में दुआएं, त़हारत और नमाज़ वग़ैरा के अहक़ाम सिखाए जाते हैं लिहाज़ा आप इन में दाख़िला लीजिये। मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान पढ़ने में कोई पैसा नहीं लगता जब कि इंग्लिश या कोई ज़बान सीखनी हो तो कोचिंग सेन्टर जाना पड़ता है, रट्टे लगाने पड़ते हैं, पैसे देने पड़ते हैं और इस के लिये लोग बेचारे क्या क्या करते हैं लेकिन कुरआने करीम मुफ़्त पढ़ाओ तब भी पढ़ने के लिये नहीं आते और कहते हैं कि हमें याद नहीं होता और अगर पढ़ते भी हैं तो इस अन्दाज़ से कि काइदा पढ़ा और फिर उसे वहीं रख दिया और दूसरे दिन आ कर खोला तो इस तरह कहां से याद होगा ? दुन्यवी उ़लूम में से बहुत कुछ याद कर लेते हैं मगर कुरआने करीम को मख़ारिज के साथ पढ़ने से कासिर होते हैं। जब दुन्यवी उ़लूम सीखने के लिये आप कोशिश करते हैं तो कुरआने पाक मख़ारिज के साथ पढ़ने के लिये भी कोशिश करना पड़ेगी। बा'जू लोग उज़्र बनाते हैं कि हमारे पास वक़्त नहीं मगर हक़ीक़त येह है कि वक़्त है लेकिन पढ़ने का ज़ब्बा नहीं, **अल्लाह** पाक ज़ब्बा नसीब फ़रमाए। اٰمِيْنُ بِمِجَاوِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/356)

सुवाल : क्या नमाज़े अ़स् के बा'द कुरआने पाक पढ़ सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! नमाज़े अ़स् के बा'द तिलावत कर सकते हैं । अलबत्ता सूरज डूबने से 20 मिनट पहले, सूरज निकलने के 20 मिनट बा'द और निस्फुन्नहारे शर्ई से ले कर जोहर का वक़्त शुरू होने तक येह तीन अवक़ात मक्रूह हैं । अगर्चे इन तीन अवक़ात में तिलावते कुरआने करीम करना जाइज़ है मगर बेहतर येह है कि इन में दीगर अज़कार या दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए । मगर कोई इन तीन अवक़ात में तिलावते कुरआन करता है तो गुनाहगार नहीं होगा । (در مختار مع رد المحتار، 2/444/403) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/435)

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक में कितनी मरतबा कुरआने पाक ख़त्म करना चाहिये ?

जवाब : तरावीह में एक बार कुरआने पाक ख़त्म करना सुन्नत है । (फ़तावा रज़विय्या, 7/458 माखूज़न) इस के इलावा जितनी तौफ़ीक़ मिले उतना पढ़ा जाए कि सवाब का काम है और अफ़ज़ल है । हमारे इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ एक कुरआन दिन में, एक कुरआन रात में और एक कुरआन पूरे महीने की तरावीह में ख़त्म फ़रमाया करते थे । यूं आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ रमज़ानुल मुबारक में 61 कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते थे ।

(الخيرات الحسان، 50) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/379)

सुवाल : हमारे यहां नमाज़े इशा के बा'द सूरए मुल्क तिलावत की जाती है तो क़ारी साहिब तिलावत मुकम्मल करने के फ़ौरन बा'द اللهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ कहते हैं फिर इस के बा'द صَدَقَ اللهُ مَوْلَانَا الْعَظِيمُ पढ़ते हैं, ऐसा करना कैसा है ?

जवाब : फ़तावा हदीसिया में है कि सूरए मुल्क ख़त्म करने के बा'द “ اللهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ” कहना मुस्तहब है । (فتاوى حدیثیه، ص 376)

कहने में भी कोई हरज नहीं है कि इस का मतलब है “अल्लाह पाक ने सच फ़रमाया।” यकीनन अल्लाह पाक ने सच फ़रमाया, हम भी इस को सच मानते हैं।
(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/94)

सुवाल : बा'ज हुप्फ़ाजे कुरआन दौराने हिफ़ज़ 15, 15 पारों की तिलावत कर लेते हैं, लेकिन हिफ़ज़ करने के बा'द उन्हें आधा पारह तिलावत करने की भी तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती, ऐसों के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब : वाक़ेई बा'ज हुप्फ़ाजे कुरआन हिफ़ज़े कुरआन के बा'द दोबारा कुरआने करीम खोल कर नहीं देखते और घन्टों घन्टों गप्पे मारने में गुज़ार देते हैं, नीज़ सोशल मीडिया इस्ति'माल करते वक़्त उन्हें पता ही नहीं चलता कि वोह पलक झपकने में कहां से कहां निकल गए, इस्लामी बहनों का हाल इस से बुरा है। याद रखिये ! हिफ़ज़ करना तो आसान है, मगर हिफ़ज़ रखना मुश्किल है। नीज़ येह बात भी ज़ेहन में बिठा लीजिये कि कुरआने करीम उमूमन साल, दो साल या तीन साल में मुकम्मल हिफ़ज़ हो जाता है, लेकिन इसे उम्र भर याद रखना और पढ़ना होता है, लिहाज़ा जिन हुप्फ़ाजे किराम से बन पड़े वोह रोज़ाना कुरआने करीम की एक मन्ज़िल तिलावत किया करें, इस तरह एक महीने में उन के चार कुरआने पाक ब आसानी ख़त्म हो जाएंगे, अगर एक मन्ज़िल नहीं पढ़ सकते तो कम अज़ कम रोज़ाना एक पारह तिलावत कर लिया करें कि ग़ैरे हाफ़िज़ के मुक़ाबले में इन्हें इतना पढ़ने में ज़ियादा देर नहीं लगेगी।

याद रहे ! एक पारह भी तज्वीद व क़वाइद की रिआयत के साथ पढ़ना ज़रूरी है जैसे मद्दात वग़ैरा, ह़दर वाले अन्दाज़ में पढ़ने की सूरत में इन्हें 20 से 25 मिनट लगेगे, लेकिन ह़दर का अन्दाज़ भी ऐसा होना चाहिये

जिसे कुरा हज़रात के नज़दीक भी हदर कहा जाए, क्यूं कि बा'ज हुपफ़ाज़ इतनी जल्दी पढ़ते हैं कि सुनने वालों को يَعْلمُونَ تَعْلَمُونَ के इलावा कुछ पल्ले ही नहीं पड़ता, नीज़ वोह अल्फ़ाज़ व हुरूफ़ चबा जाते और मद्दात वगैरा का बिल्कुल भी ख़याल नहीं रखते। जो हाफ़िज़े कुरआन नहीं हैं, चाहें तो वोह भी रोज़ाना एक पारह पढ़ लिया करें कि शजरे शरीफ़ में रोज़ाना एक पारह पढ़ने की तरगीब मौजूद है। बहर हाल अल्लाह पाक जिसे तौफ़ीक़ दे वोही खुश नसीब तिलावते कुरआन करने में काम्याब होता है, वरना हकीक़त येह है कि कई लोगों का तिलावते कुरआन में दिल नहीं लगता।

सुवाल : अगर कोई कुरआने करीम की तिलावत के दौरान पढ़ने में ग़लती कर रहा हो तो क्या मज्मअ में उस की इस्लाह कर सकते हैं ?

जवाब : अगर ऐसी फ़ाहिश ग़लती की जिस से मा'ना तब्दील हो रहे हों तब तो मज्मअ में उस की इस्लाह करनी चाहिये जब कि फ़साद का अन्देशा न हो। (غنية المتولى، ص 498 مؤيداً) अगर तज्वीद की ग़लती की जैसे “गुन्ना या इख़फ़ा” नहीं किया तो उसे भरे मज्मअ में न टोका जाए, बल्कि अ़लाहदा हिक़मते अ़मली और नरमी से तवज्जोह दिला दी जाए।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/298)

सुवाल : चलते फिरते, चप्पल पहन कर या बे वुजू कुरआने पाक पढ़ना कैसा ?

जवाब : बे वुजू कुरआने करीम पढ़ना जाइज़ है लेकिन कुरआने करीम को बे वुजू छूना जाइज़ नहीं है। (در مختار مع الشامخ، 1/348) नीज़ चप्पल पहन कर कुरआने करीम पढ़ने में हरज नहीं। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/511)

सुवाल : रोज़ाना कितना कुरआने पाक पढ़ना चाहिये ?

जवाब : अगर पूरा कुरआने पाक भी पढ़ लिया तब भी ना जाइज़ नहीं है । रोज़ाना कितना पढ़ना चाहिये तो शजरए क़ादिरिय्या में रोज़ का एक पारह तिलावत करना लिखा है ताकि एक महीने में एक बार कुरआने करीम ख़त्म हो जाए । हमारे बा'ज तुलबा ऐसे भी हैं जो रोज़ाना कुरआने करीम की एक मन्ज़िल ख़त्म करते हैं । कुरआने करीम में सात मन्ज़िलें हैं तो वोह सात दिन में कुरआने करीम ख़त्म कर लेते हैं लिहाज़ा जितना पढ़ सकता है पढ़े और कोशिश करे जब तक दिल लगा हुवा है पढ़ता रहे, रोज़ाना एक मन्ज़िल पढ़ ले तो मदीना मदीना । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/514)

सुवाल : बस में इयरफ़ोन के ज़रीए रीकॉर्ड शुदा कुरआने पाक की तिलावत सुन रहे थे, उस में आयते सज़्दा आ गई तो येह सज़्दा सर को झुका लेने से अदा हो जाएगा ?

जवाब : रीकॉर्ड शुदा तिलावत में आयते सज़्दा सुनने से सज़्दा वाजिब नहीं होगा और सर झुकाने की कोई Formality करने की भी हाज़त नहीं है । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/482)

सुवाल : दा'वते इस्लामी के चैनल पर अगर Live आयते सज़्दा सुनी तो क्या सज़्दए तिलावत वाजिब हो जाएगा ?

जवाब : दा'वते इस्लामी के चैनल या किसी भी चैनल पर अगर Live (बराहे रास्त) आयते सज़्दा सुनी तो सज़्दए तिलावत वाजिब नहीं होगा । (फ़तावा रज़विय्या, 23/446 मफ़हूमन, वक़ारुल फ़तावा, 2/113)

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/488)

सुवाल : अगर किसी के कई सज़्दए तिलावत रह गए हों तो उन को अदा करने का क्या तरीक़ा है ?

जवाब : जितने सज्दे रह गए हैं वोह अदा करे, “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” कह कर सज्दा करे, सज्दे में तीन बार “**سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى**” पढ़े । फिर बैठ जाए और दोबारा “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” कह कर उसी तरह करे, यूँ जितने सज्दे हैं सब मुकम्मल कर ले । (فتاوىٰ ہندویہ، 1/135) सज्दए तिलावत के लिये बा वुजू होना, क़िब्ला रुख़ होना और जगह का पाक होना जरूरी है ।

(در مختار مع رد المحتار، 2/699) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/522)

सुवाल : अगर तिलावते कुरआने पाक हो रही हो तो क्या बन्दा दुरूदे पाक पढ़ सकता है ?

जवाब : जो लोग कुरआन सुनने के लिये जम्अ हों उन पर फ़र्जे ऐन है कि वोह कान लगा कर तवज्जोह से तिलावते कुरआन सुनें । (फ़तावा रज्विय्या, 23/352) और अगर कहीं से तिलावत की आवाज़ आ रही हो और येह पहले से अपने कामकाज में मसरूफ़ हो तो इस पर सुनना फ़र्ज नहीं है ।

(غنية المتعملي، ص 497) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/488)

सुवाल : कुरआने पाक की तिलावत के दौरान अज़ान शुरूअ हो जाए तो क्या तिलावत रोक देनी चाहिये ?

जवाब : जी हां ! तिलावत रोक कर अज़ान का जवाब देना चाहिये । (فتاوىٰ ہندویہ، 1/57) अलबत्ता जिस आयत की तिलावत कर रहे हों उस को पूरा कर लेना चाहिये या कम अज़ कम उतना हिस्सा पढ़ लेना चाहिये जिस से मा'ना पूरे हो जाएं । अज़ान के इलावा भी जब भी तिलावत रोकनी हो तो आयत पूरी पढ़ने के बा'द रोकनी चाहिये, इसी तरह ना'त शरीफ़ पढ़ रहे हों तो उस का शे'र भी मुकम्मल कर के ना'त शरीफ़ रोकनी चाहिये, दा'वते इस्लामी का चैनल Off करना हो और उस पर तिलावत या ना'त आ रही

हो, इस में भी इसी बात का लिहाज़ रखना चाहिये कि आयत या शे'र पूरा हो जाए तब दा'वते इस्लामी का चेनल Off किया जाए। मेरी बहुत पुरानी आदत है कि जैसे बयान के लिये जाता था या मदनी मुज़ाकरे के लिये जब भी आता हूँ और तिलावत हो रही होती है या कोई मस्अला या हिकायत बयान हो रही होती है तो अगर कभी मेरी तवज्जोह न रहे तो दरमियान में ही आ जाता हूँ वरना पीछे ही रुक जाता हूँ, ताकि तिलावत ख़त्म हो जाए और मस्अला या हिकायत पूरी हो जाए, वरना लोग खड़े हो जाएंगे और ना'रे लगाना शुरू कर देंगे जिस से तिलावत वगैरा दरमियान में ही रुक जाएगी या पढ़ने सुनने में ख़लल आएगा। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/447)

सुवाल : क़ब्रिस्तान में बुलन्द आवाज़ से कुरआने करीम पढ़ना कैसा है ?

जवाब : अच्छी चीज़ है जब कि कोई और रुकावट न हो।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/473)

सुवाल : Job (नोकरी) के दौरान कुरआने पाक की तिलावत कर सकते हैं ?

जवाब : अगर Private job (गैर सरकारी नोकरी) है और सेठ ने इजाज़त दे रखी है फिर तो कोई मस्अला नहीं है (हलाल तरीके से कमाने के 50 मदनी फूल, स. 19 मफ़हूमन) और अगर ऐसी Job है जिस के दौरान तिलावत करने से आप के काम पर फ़र्क नहीं पड़ता तब भी जाइज़ है। जैसे बंगलों पर चोकीदार ड्यूटी देते हैं, येह बैठे बैठे तिलावत कर रहे हों या तस्बीह ले कर दुरूद शरीफ़ पढ़ रहे हों तो इस में कोई हरज नहीं है। जैसा मौक़अ होगा वैसी इजाज़त होगी। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/412)

सुवाल : अगर सूए यासीन पढ़ने से 10 कुरआने पाक ख़त्म करने का सवाब मिलता है तो हम पूरा कुरआने पाक पढ़ें या सिर्फ़ सूए यासीन पढ़ लें ?

जवाब : सूरए यासीन की तिलावत से 10 कुरआने पाक ख़त्म करने का सवाब मिलता है। (2896: حدیث: 406/4, तर्ज़ी) इसी तरह तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ने से पूरा कुरआन पढ़ने का सवाब मिलता है। (1886: حدیث: 315, मुस्लम) लेकिन फिर भी कुरआने पाक की तिलावत करनी चाहिये। नीज़ वालिदैन को रहमत की नज़र से देखें तो एक मक्बूल हज़ का सवाब मिलता है। (7856: حدیث: 186/6, شعب الایمان) अब अगर दिन में 100 बार देखेंगे तो 100 हज़ का सवाब मिलेगा लेकिन इस के साथ साथ का'बे का तवाफ़ भी करना है, सफ़ा व मर्वह की सई भी करनी है, नीज़ मैदाने अरफ़ात का वुकूफ़ भी करना है या'नी इन मुक़द्दस मक़ामात पर हाज़िर हो कर भी हज़ करना है और घर में वालिदैन की ज़ियारत कर के घर में भी हज़ का सवाब कमाना है।⁽¹⁾

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/362)

1... इस तरह की अहादीसे मुबारका में इबादात का सवाब मुराद होता है न कि अस्ले इबादात जैसा कि हदीसे पाक में है : जो मग़रिब के बा'द छे रक्अतें पढ़े जिन के दरमियान कोई बुरी बात न करे तो येह 12 बरस की इबादात के बराबर होंगी। (435: حدیث: 439/1, तर्ज़ी) इस हदीसे पाक के तहत हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं : ख़याल रहे कि इन जैसी अहादीसे से फ़ज़ाइल में सवाबे इबादात मुराद होता है न कि अस्ले इबादात, लिहाज़ा इस का येह मतलब नहीं कि एक बार नमाज़े अव्बाबीन पढ़ कर 12 साल तक नमाज़ से बे परवाह हो जाओ। (मिरआतुल मनाज़ीह, 2/226) इसी तरह एक और हदीसे पाक में है : जो **अल्लाह** पाक के लिये सुब्ह और शाम सो सो बार **سُبْحَانَ اللهِ** पढ़े तो वोह 100 हज़ करने वाले की तरह है। (3482: حدیث: 288/5, तर्ज़ी) अब इस हदीसे पाक का येह मतलब नहीं कि सुब्हो शाम सो सो बार येह तस्बीह पढ़ लें और हज़ करना छोड़ दें चुनान्चे इस हदीसे पाक की शर्ह बयान करते हुए मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि हज़ का सवाब मिलना और है, हज़ की अदा कुछ और, यहां सवाब का ज़िक्र है न कि अदाए हज़ का, जैसे अतिब्बा कहते हैं कि “एक गर्म किये हुए मुनक्के (या'नी एक क़िस्म की बड़ी क़िशमिश) में एक रोटी की ताक़त है” मगर पेट रोटी ही से भरता है, कोई शख्स दो वक़्त तीन तीन मुनक्के खा कर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता। वाक़ई इन तस्बीहों (या'नी **سُبْحَانَ اللهِ** सुब्हो शाम सो सो बार पढ़ने) में इतना ही सवाब है मगर हज़ अदा करने ही से होंगे।

(मिरआतुल मनाज़ीह, 3/346)

सुवाल : टोपी पहने बिगैर कुरआने मजीद पढ़ना कैसा ?

जवाब : जाइज़ है, लेकिन अदब येही है कि नंगे सर न हो। मुस्तहब येह है कि तिलावते कुरआने मजीद के लिये इमामा पहने, उम्दा लिबास पहने, खुशबू लगाए और का'बे शरीफ़ की तरफ़ रुख़ कर के दो जानू हो कर बैठे। (बहारे शरीअत, 1/550, हिस्सा : 3 माखूज़न) जितना अदब के साथ बैठ कर तिलावत करेगा उतनी ज़ियादा बरकतें पाएगा।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/116)

सुवाल : तज्वीद की अहम्मियत और कुरआने करीम ग़लत मख़ारिज से पढ़ने के सबब होने वाली ग़लतियों की चन्द मिसालें बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : इतनी तज्वीद सब को आनी चाहिये जो **مَا يُجُوزُ بِهِ الصَّلَاةُ** की हद तक हो या'नी जिस से नमाज़ जाइज़ व दुरुस्त हो सके, येह ज़रूरी है। (फ़तावा रज़विय्या, 3/343 माखूज़न) याद रखिये ! नमाज़ में जितना कुरआने पाक पढ़ना फ़र्ज़ और वाजिब है उतना ही याद होना भी ज़रूरी है। (315/2 در مختار) आम तौर पर रमज़ान शरीफ़ में लोगों में ऐसा जज़्बा होता है कि वोह पूरे कुरआने करीम की तिलावत कर लेते हैं, बा'ज़ खुश नसीब तो **مَا شَاءَ اللَّهُ** एक से ज़ियादा कुरआने करीम ख़त्म करते हैं। मगर उन्हें चाहिये कि किसी क़ारी को अपना कुरआने पाक सुना दें और उस से राहनुमाई ले लें कि आया वोह सहीह पढ़ते हैं या नहीं ? **अल्लाह** न करे अगर सहीह पढ़ना नहीं आता होगा तो एक बार सूए फ़ातिहा सहीह पढ़ना 100 मरतबा (ऐसा) कुरआने पाक ख़त्म करने से अफ़ज़ल होगा।

اللَّحْدُ لِلَّهِ ! दा'वते इस्लामी के तहत "मद्रसतुल मदीना ओन लाइन" सर्विस मौजूद है जिस के ज़रीए कुरआने करीम भी पढ़ना सिखाया जाता है,

नमाज़ भी सिखाई जाती है और भी बहुत सारे कोर्सिज़ इस शो'बे के तहूत करवाए जाते हैं, येह तमाम कोर्सिज़ घर बैठे किये जा सकते हैं, लिहाज़ा “मद्रसतुल मदीना ओन लाइन” सर्विस के ज़रीए घर बैठे अपना कुरआने पाक दुरुस्त कर लीजिये । बहर हाल कुरआने करीम ग़लत पढ़ने के तअल्लुक़ से मैं ने कुछ अल्फ़ाज़ लिखे थे उन में से चन्द अल्फ़ाज़ अर्ज़ करता हूं जिन को ग़लत पढ़ने से उन के मअ़ानी बदल जाते हैं :

कुरआने करीम ग़लत पढ़ने की चन्द मिसालें

﴿1﴾ एक हर्फ़ को दूसरे हर्फ़ के साथ बदलने से मा'ना बदल जाते हैं मसलन कई लोगों को “الْحَمْدُ لِلَّهِ” में मौजूद लफ़ज़ “हम्द” की “हा” को हल्क़ से निकालना नहीं आता लिहाज़ा वोह “الْهَمْدُ” पढ़ते हैं । “الْهَمْدُ” और “الْحَمْدُ” में क्या फ़र्क़ है मुलाहज़ा कीजिये : हम्द का मा'ना है “खूबी, ता'रीफ़” अगर “الْحَمْدُ لِلَّهِ” की जगह “الْهَمْدُ” पढ़ा तो इस के जो मा'ना बनेगे वोह कहने की हिम्मत नहीं है लेकिन “هَمْدٌ” के मा'ना अर्ज़ कर देता हूं : “هَمْدٌ” का मा'ना है : आग का धीमा होना, हलका होना । ﴿2﴾

(1:30, الاغلام) ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : “तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है ।” “قُلْ” दो नुक्तों वाले काफ़ से आता है जब कि दूसरा डन्डी वाले काफ़ से आता है या'नी “كُلٌّ” । “قُلْ” के मा'ना हैं “कह दो या फ़रमा दो” जब कि डन्डी वाले काफ़ से “كُلٌّ” का मा'ना है “खा” ज़रा सोचिये ! दोनों में कितना फ़र्क़ है । ﴿3﴾ “قَالُوا” का मा'ना है “उन्होंने ने कहा” जब कि डन्डी वाले काफ़ से “كَانُوا” पढ़ा जाए तो मा'ना होगा : उन्होंने ने नापा, उन्होंने ने पैमाइश की । ﴿4﴾ अल्लाह पाक की एक सिफ़त “عَلِيمٌ” है, अगर इस लफ़ज़ को “ऐन” से पढ़ें तो मा'ना होगा

“जानने वाला” कुरआने पाक में है : ﴿إِنَّكَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ﴾ (پ10، الانفال:43) :
 तरजमए कन्जुल ईमान : “बेशक वोह दिलों की बात जानता है” जब कि
 “अलिफ़” से “أَلِيمٌ” पढ़ा जाए तो मा’ना होगा “दर्दनाक” ज़रा सोचिये !
 दोनों में कितना फ़र्क़ है ! लेकिन हमारे यहां ज़ियादा तर लोग तिलावत करते
 वक़्त इस लफ़ज़ को “अलिफ़” से “أَلِيمٌ” पढ़ते होंगे, ख़ास तौर पर मेमन
 और गुजराती क़ौम में “ऐन” और “अलिफ़”, “हा” और “हा” में इतना
 फ़र्क़ नहीं किया जाता लिहाज़ा ऐसे लोग जब तक किसी अच्छे क़ारी से नहीं
 पढ़ेंगे उस वक़्त तक उन्हें दुरुस्त कुरआने करीम पढ़ना नहीं आएगा । अपने
 मख़ारिज दुरुस्त करने के लिये मद्रसतुल मदीना में दाख़िला ले लीजिये,
 إِنَّ شَاءَ اللَّهُ ! मख़ारिज दुरुस्त हो जाएंगे । ﴿5﴾ “عَلَمٌ” “ऐन” से पढ़ें तो मा’ना
 होगा “झन्डा या परचम” जब कि “अलिफ़” से “أَلَمٌ” पढ़ा जाए तो
 मा’ना होगा “ग़म” । ﴿6﴾ “عَمَلٌ” “ऐन” से पढ़ें तो मा’ना होगा “काम”
 अगर “अलिफ़” से “أَمَلٌ” पढ़ा जाए तो मा’ना होगा “उम्मीद” । ﴿7﴾
 सूरए कौसर में है : (پ30، الكوثر:2) ﴿وَأَنْهَرُوا﴾ तरजमए कन्जुल ईमान : “और
 कुरबानी करो ।” अगर इस को “हा” से “وَأَنْهَرُوا” पढ़ेंगे तो मा’ना होगा
 “और झिड़क या और डांट” ज़रा सोचिये ! दोनों में कितना फ़र्क़ है ।

बहर हाल कुरआने करीम दुरुस्त सीखना लाज़िमी है, लिहाज़ा
 इस्लामी भाई हों या इस्लामी बहनें सभी को कुरआने करीम दुरुस्त सीखना
 चाहिये, खुसूसन बड़ी बूढ़ियों को क्यूं कि इन बेचारियों में मख़ारिज की
 दुरुस्ती के हवाले से कुछ ज़ियादा ही मसाइल होते हैं, अगर कोई 100 साल
 की बुढ़िया है और उसे दुरुस्त कुरआने करीम पढ़ना नहीं आता तो उसे भी

कुरआने पाक सीखना चाहिये और सीखने की कोशिश करती रहेगी तो
 إِنَّ شَاءَ اللَّهُ सवाब मिलता रहेगा। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/278)

सुवाल : तिलावत के दौरान अगर सज्दा तिलावत आ जाए तो क्या वहीं रुक कर सज्दा करना चाहिये ? बा'जू लोग तिलावत ख़त्म करने के बा'द सज्दा करते हैं, ऐसा करना कैसा है ?

जवाब : अगर कोई रुकावट न हो तो उसी वक़्त सज्दा करना बेहतर है। अलबत्ता बा'द में किया तब भी गुनाह नहीं है। जब सज्दा वाजिब हो गया तो वोह वाजिब अदा करना ही है।

(अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) अगर बन्दा बा वुजू है तो उसी वक़्त सज्दा तिलावत कर लेना बेहतर है और बिला ज़रूरत ताख़ीर करना मक्रूहे तन्ज़ीही है।

(703/2, **در**) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/265)

सुवाल : सूरए यासीन को वज़ीफ़े के तौर पर पढ़ना कि मेरा फुलां काम हो जाए, क्या येह जाइज़ है ?

जवाब : सूरए यासीन शरीफ़ को बतौर वज़ीफ़ा या किसी हाज़त के लिये पढ़ना जाइज़ है, हाज़त ना जाइज़ हो तो फिर अलग बात है, जाइज़ हाज़त के लिये पढ़ने में कोई हरज नहीं है। वज़ीफ़ा करना है तो इस की कोई मख़्सूस ता'दाद होगी और ऐसे काम किसी की राहनुमाई में किये जाते हैं, अलग से करने में रिस्क होता है कि चोट न लग जाए। पहले तो यासीन शरीफ़ किसी क़ारी साहिब को सुना दें कि सहीह पढ़ सकते भी हैं या नहीं ? सहीह पढ़ सकते हैं तो किसी साहिबे इजाज़त की सोहबत में रह कर उस की राहनुमाई में इस का विर्द किया जाए, आम तौर पर राहनुमा कम ही मिलते हैं। मेरा

तो मश्वरा येह है कि मुसीबतों से बचने के लिये और भी अवरादो वजाइफ़ हैं उन का विर्द करें और “सलातुल हाजात” पढ़ें क्यूं कि वज़ीफ़ों की चोटें खाए हुए मैं ने देखे हैं, बा’ज अवकात ऐसी चोट लगती है जिस का दुरुस्त होना मुश्किल होता है, इलाज असर नहीं करता, दिमाग़ फ़ेल हो जाता है, फिर वोह पथ्थर मारते और गालियां निकालते हैं, ऐसों को संभालने के लिये घर में जन्जीरों से बांधना और न जाने क्या क्या करना पड़ता है, यूं सारा खानदान इस में तबाह हो कर रह जाता है लिहाजा बिगैर किसी राहनुमा के इस तरह के वजाइफ़ न किये जाएं। अगर आप किसी जामेए शराइत पीर साहिब के मुरीद हैं, जिन की शरीअत के मुताबिक़ पूरी दाढ़ी है और वोह अ़लिमे दीन हैं तो उन के “शजरे” में दिये गए मुख़्तसर अवरादो वजाइफ़ पढ़ें। मेरा मश्वरा येही है कि हर दर्द की दवा है صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ, दुरूद शरीफ़ की कसरत बहुत बड़ा वज़ीफ़ा है, इस की बरकत से اِنْ شَاءَ اللهُ सारे मसाइल हल हो जाएंगे।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/331)

सुवाल : क्या घर में रीकोर्ड शुदा तिलावते कुरआन लगा कर कामकाज कर सकते हैं ?

जवाब : रीकोर्ड शुदा तिलावते कुरआने पाक सुनने के वोह आदाब नहीं हैं जो बराहे रास्त (या’नी बिगैर रीकार्ड वाली) तिलावत सुनने के हैं, चूँकि रीकोर्ड शुदा तिलावत में भी कुरआने करीम पढ़ा जाता है लिहाजा अगर कोई सुनने वाला न हो तो उसे बन्द कर दिया जाए। यूं ही रीकोर्ड शुदा ना’त शरीफ़ भी चलाई जाती है, वोह भी अगर सुनने वाला न हो तो बन्द कर देनी चाहिये।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/93)

अगले हफ़्ते का रिसाला

